सिनेमा में दलित प्रश्न और 'Fandry'

मेघा

पीएच.डी. हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा

सिनेमा एक दृश्य-श्रव्य माध्यम है। यह सबसे अधिक संप्रेषणीय विधा है। साहित्य की ही तरह सिनेमा भी अपनी मूलभूत संवेदना सामाजिक सरोकारों से ही प्राप्त करता है। इसकी पहुँच समाज के हर तबके तक है। समाज के हर तबके तक अपनी पैठ के कारण सिनेमा का एक बड़ा बाज़ार बन चुका है और आज वही दिखाया जा रहा है, जो एक बड़ा वर्ग देखना पसंद करता है। वह बड़ा तबका मात्र मनोरंजक फिल्में देखना पसंद करता है। आज का समाज सिनेमा से बहुत अधिक संचालित है। पूरा मध्य वर्ग व निम्न-मध्य वर्ग का समाज अपने खाने, पहनने, चलने, बोलने आदि सब कुछ सिनेमा द्वारा संचालित होता जा रहा है।"भारत दुनिया का सबसे अधिक फिल्म बनाने वाला देश है। आज भारत में हर साल लगभग पाचीस भाषाओं पर फिमें बनती हैं।"(पत्रिका नया पथ: हिन्दुस्तानी सिनेमा के सौ बरस पर केन्द्रित, जनवरी-जून 2013, पृ॰3) जबकि सिनेमा दरअसल दो भागों में बंटा है- कमर्शियल सिनेमा और समांतर सिनेमा। कमर्शियल सिनेमा में मात्र मनोरंजक फिल्में ही देखने को मिलती हैं। लेकिन जब बात समांतर सिनेमा की हो तो कई समस्यापरक फिल्में देखने को मिलती हैं जैसे 'डोर', '15 पार्क एवेन्यू', 'अंतर्द्वंद्व', 'मंडी', 'बाज़ार', 'सद्गति', 'अछूत कन्या' आदि। जब हम भारत में समस्यापरक सिनेमा में दलित केन्द्रित फिल्में ढूँढने निकलते हैं तो बहुत ही कम फिल्में देखने को मिलती हैं। जबकि प्रादेशिक सिनेमा, उसमें भी मराठी सिनेमा इस विषय में हिन्दी सिनेमा से अधिक समृद्ध देखने को मिला, जिसमें जोगवा, फेंडरी आदि जैसी श्रेष्ठ फिल्में देखने को मिली। मैं अपना शोधपत्र मराठी फिल्म Fandry पर केन्द्रित करना चाहूंगी।

Fandry का सामान्य अर्थ है सूअर। वह सूअर जो इस देश व समाज के सभी जीव-जंतुओं में सबसे निकृष्ट दृष्टि से देखा जाता है। इस फिल्म को निर्देशित किया है नागराज मंजुले ने। fandry की कहानी दलित परिवार में रहने वाले एक किशोर की है। उसका नाम जब्या (जांबवन्त कचरू माने) है। कचरु माने उसके पिता का नाम है। कहानी महाराष्ट्र के अकोलनेर नाम के गाँव की पृष्ठभूमि और इस गाँव के इस इकलौते माने परिवार व मुख्यतः जब्या के इर्द-गिर्द घूमती है। जब्या का परिवार अपने जीवनयापन, मात्र दो वक्त की रोटी जुटाने के लिए बहुत संघर्ष करता है। उन्हे पूरे परिवार के साथ मेहनत मजदूरी करनी पड़ती है। जब्या को भी स्कूल छूटने के बाद अक्सर काम पर जाना पड़ता है और कभी-कभी तो इस कारण से स्कूल से छुट्टी भी लेनी पड़ती है। भारत के किसी भी आम गाँव की तरह अकोलनेर की स्थिति है। इस गाँव में भी ऊंची जाति का दबदबा है। उच्च वर्ण आर्थिक रूप से सम्पन्न भी है इसलिए दलित व अन्य वर्ग पर उसका दबाव बना रहता है।

जब्या सातवीं कक्षा का छात्र है। वह अपनी ही कक्षा में पढ़ने वाली शालू नाम की सवर्ण

लड़की से मन ही मन प्यार करता है। पर चूंकि वह एक गरीब दलित परिवार से है और गाँव की सामाजिक दशा उसे यह हिम्मत नहीं देती कि वह अपने दिल की बात शालू तक पहुंचा सके। उसके दिल का हाल जानने वाला पूरे गाँव में केवल एक लड़का है पिरया (पिराजी)। पिरया ही उसका हमराज़ व हमदर्द है। पिरया को छोड़ कर पूरे गाँव के लोगों व अपने सहपाठियों द्वारा हमेशा जब्या का उपहास ही देखने को मिलता है। पिरया के अलावा एक अधेड़ उम्र का चंक्या (चंकेश्वर साठे) भी उसका एक साथी है। चंक्या पूना के किसी गाँव से आया व्यक्ति है। वह जब्या के हमदर्द के रूप मे जगह-जगह जब्या को हिम्मत बँधाता दिखता है। चंक्या का किरदार अदा करने वाला अदाकार और कोई नहीं फिल्म के निर्देशक नागराज मंजुले हैं। चंक्या का किरदार जब्या के दिल में एक सकारात्मकता को बनाए रखने के कारण एक बहुत ही खास किरदार के रूप सामने आता है। चंक्या जब्या के गाँव में 'साइकल मार्ट और कैरम हाउस' नाम से एक दुकान चलाता है। वह साइकिलों की मरम्मत करता है व साइकिल को किराए पर देता है, तथा साथ ही कैरम भी खेलने खिलाने का व्यापार करता है। जब्या का यहाँ नियमित रूप से आना जाना है। वह बैठे-बैठे लोगों को खेलते देखता है। लेकिन उसका यहाँ रोज़ाना आने का कारण यह है कि जिस जगह यह दुकान है, उसके ठीक सामने शालू का घर है। स्कूल जाने से पहले ही जब्या रोज़ उसकी दुकान में बैठकर चोरी-चोरी नज़रों से शालू को ताकता रहता है और शालू के पीछे-पीछे वहाँ से स्कूल निकल जाता है।

जब्या अपने मजदूरी तथा अपने परिवार की स्थिति को अपने सहपाठियों से और विशेषतः शालू से लगातार छिपाने की कोशिश करता दिखता है। अक्सर जब स्कूल से छुट्टी लेकर काम करने जाता है तो काम से लौटते समय वह छिपता-छिपाता घर जाता है क्योंकि स्कूल से छुट्टी का और काम से लौटने का समय लगभग एक ही होता है। खासतौर से शालू को वह यह कभी पता नहीं चलने देना चाहता कि वह कितना गरीब व दरिद्र स्थिति में है। उसके पास पहनने के लिए ढंग के कपड़े भी नहीं है। वह अपने परिवार की हर स्थिति से अवगत है, लेकिन अपनी उम्र के हर किशोर की भांति उसके अपने कुछ शौक व सपने हैं। वह भी चाहता है कि उसके पास अच्छे कपड़े हों, जिनसे वह शालू को अपनी ओर आकर्षित कर सके। वह चाहता है कि शालू भी उसे वैसे ही प्यार करे जैसे वो उससे प्यार करता है। उसे लगता है कि यदि वह अपनी आर्थिक स्थिति ठीक कर लेगा तो शायद शालू उसके पास आ जाएगी। इसके लिए वह पड़ोस के गावों में आइसक्रीम व कोला बेचने का भी काम करता है। इनसे कमाए हुए पैसों से वो अपने लिए जींस पैंट और टीशर्ट खरीदने की योजना बनाता है, लेकिन दुर्भाग्यवश इस योजना में पानी फिर जाता है और वह बहुत हतोत्साहित हो जाता है।

ऐसे में चंक्या उसका उत्साहवर्धन करता है। पिरया हर दुख-सुख में उसके साथ दिखाई देता है, फिर वो कक्षा में हो, शालू के इंतज़ार में चंक्या की दुकान पर जाकर बैठना हो, काली चिड़िया के शिकार में जंगल-जंगल भटकना हो, मेले में जाना हो, आइसक्रीम व कोला बेचने के लिए गांवों की गली-गली में धूप में फिरना हो आदि। चंक्या आमतौर पर समाज में पाए जाने वाले ऐसे व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता दिखता है, जो अपने जीवन में बेकार है लेकिन अपने अनुभवों को लोगों से साझा करने में चूकता नहीं है। लोग उसे गपोड़ी समझते हैं, जो शायद सच ही होता है। यह जब्या को चाहता है। उसे समझता भी है, समझाता भी है। यह पियक्कड़ शराबी जब्या जैसे बच्चे के माता-पिता की आँखों में खटकता भी है। जब्या का पिता कचरू जो स्वयं समाज में उपेक्षित है, जब्या को चंक्या से दूर रहने की हिदायत देता दिखता है। उसे डर है कि कहीं उसकी संगति में जब्या बिगड़ न जाये। जबकि जब्या का चंक्या पर बहुत विश्वास है। इस किरदार का शेड सकारात्मक है या नकारात्मक यह तो समझ नहीं आता, लेकिन इस तरह की मिली-जुली शख्सियत आमतौर पर बाज़ारों व दुकानों पर देखी जा सकती है।

फिल्म की शुरुआत से ही जब्या को एक काली चिड़िया के पीछे भागते हुए दिखाया गया है। पूरी फिल्म में समय-समय पर वह काली चिड़िया दिखाई देती है और अंत तक उसके हाथ नहीं आती। वह और पिरया लगातार उसे पकड़ने के असफल प्रयास में लगे रहते है। जिस काली चिड़िया के पीछे वह भागते रहते हैं वह काली चिड़िया कोई और नहीं जब्या की महत्वाकांक्षा का प्रतीक

है, जो शालू से जुड़ी है और जिसे पूरा करने के लिए जब्या न केवल गाँव में अपने परिवार के साथ छिपता-छिपाता मज़दूरी करता है, बल्कि स्कूल के बाद अपने आस-पास के गांवों में आइस्क्रीम व कोला बेचने का काम भी करता है और इसके साथ अपनी कक्षा में भी ध्यान देता है। कक्षा छूटने पर अपने सहपाठियों से पता करके अपना गृहकार्य व कक्षा में पढ़ाया जाने वाला हर कार्य रात-रातभर जागकर पूरा करता है। काली चिड़िया का एक अन्य परंतु प्रत्यक्ष पक्ष यह भी है जो जब्या के व्यक्तित्व और उसकी महत्वाकांक्षाओं में चंक्या जैसे पात्र का प्रभाव भी दिखलाता है। चंक्या ने उसे बताया है कि उस काली चिड़िया को जलाकर उसकी राख अगर किसी पर डाल दी जाए तो वो उसके वश में हो जाएगा। जब्या शालू से प्यार करता है। वह इस सामाजिक ढांचे से न केवल अवगत है बल्कि इससे सबसे अधिक प्रताड़ित भी है। उसके हर सपने और हर महत्वाकांक्षा का केंद्र शालू के ही इर्द-गिर्द घूमता रहता है। वह यह जानता है कि शालू कभी भी उसे स्वीकार नहीं करेगी, अतः वह उस काली चिड़िया की राख़ से उसे अपने वश में करने का टोटका अपनाने का भी पूरा प्रयास करता है। यह अलग बात है कि अंत तक वह काली चिड़िया उसके हाथ नहीं लग पाती।

फिल्म स्थान-स्थान पर दर्शकों का दिल द्रवित करती है। जब मेले में कचरू नाचते हुए जब्या को जबरन ले जाकर उस मेले का मजदूर बना देता है। एक रौशनी करने वाला, हाथ में ट्यूबलाइट लेकर चलने वाला जब्या अपने सपनों को चूर चूर होता देखता है। इसी प्रकार हर रोज़ उसके आत्मसम्मान को चोटें पहुँचती हैं। जहां सब बड़े, बूढ़े व बच्चे नाच रहे होते हैं, जिनमें जब्या के सहपाठी जो उसे खास चिढ़ाने के लिए उसके इर्द-गिर्द नाच रहे हैं, वहाँ जब्या आँखों में आँसू लिए अपने सर पर ट्यूबलाइट लिए चल रहा है। गाँव के मेले में सूअर यहाँ-वहाँ गंदगी मचाए फिरते हैं। भगवान की पालकी निकलते समय एक सूअर उस तथाकथित पवित्र स्थान से गुज़र जाता है। थोड़ी देर बाद पालकी उठाने वालों में से आगे चलने वाला व्यक्ति गिर पड़ता है, जिस कारण पालकी भी गिर जाती है। ये उच्च सभ्य वर्ग में एक अपशगुन माना जाता है। ऐसे में पाटिल कचरु को बुलाता है और एक बड़ा सूअर पकड़ कर ले जाने को बोलता है। कचरू बोलता है कि उसकी छोटी बेटी सुरेखा की दो दिन में शादी है तथा उसके पैर में कुछ दिनों से बहुत दर्द है, अतः उसके लिए यह कार्य बहुत मुश्किल है। उसके अकेले के बस का नहीं है। परंतु पाटिल नहीं मानता और उसे बोलता है कि वह अपने परिवार के सभी सदस्यों को लेकर जाय और स्कूल के पीछे बहुत सारे सूअर हैं। उनमें से एक बड़े सूअर को पकड़ कर ले जाए, मारने के लिए। यदि वह ऐसा करेगा तो पाटिल उसे गाँव के फ़ंड में से उसकी ज़रूरत के हिसाब से पैसे देगा। कचरु को बेटी की शादी के दहेज के लिए पैसे की वैसे ही बहुत ज़रूरत है। अतः वह तैयार हो जाता है।

अगले ही दिन सुबह-सुबह अपने पूरे परिवार, उसकी पत्नी, दो बेटियाँ और एक बेटा जब्या को लेकर वह सूअर मारने के लिए चल पड़ता है। सुरेखा जिसकी शादी है, अपने हाथ में शगुन की महंदी लगाए पिता के पीछे-पीछे सूअर मारने के लिए चल पड़ती है और सारा दिन धूप में खपती है। जब्या के लिए यह बेहद शर्मनाक घड़ी होती है क्योंकि स्कूल का समय होने को है और उसके सहपाठी स्कूल आना शुरू कर देते हैं और पीछे सूअर के शिकार का तमाशा देखने खड़े हो जाते हैं। जब्या अपने पूरे परिवार के साथ सूअर पकड़ने के लिए संघर्षरत है और उसका पूरा स्कूल खूब मज़े से यह तमाशा देख रहा है। स्कूल की घंटे बजती है। बच्चे कक्षा लेने अपनी-अपनी कक्षाओं में चले जाते हैं। जब्या की जान में जान आती है, वह फिर लग जाता है परिवार के साथ सूअर मारने। स्कूल का समय खत्म हो जाता है लेकिन सूअर हाथ नहीं आता है, अब तक वे लगातार काम में लगे हैं। इतने में स्कूल की घंटी बज जाती है। और फिर तमाशा देखने वालों की भीड़ जमा हो जाती है। इस बार जब्या के लिए असहाय हो जाता है, क्योंकि इस बार भीड़ में शालू भी है। वह जाकर छुप जाता है। उसके घर वाले उसे आवाज़ देते-देते थक जाते हैं, लेकिन वह बाहर नहीं आता। थोड़ी देर में सूअर के पीछे भागते-भागते कचरु को जब्या मिल जाता है और वो गुस्से में लाल हो कर उसे पीटते हुए बाहर लाता है। जिस इज्ज़त को जब्या इतनी देर से बचाने की कोशिश में लगा हुआ था, वह पूरी तरह मिट्टी में मिल चुकी होती है। अब अपना सारा गुस्सा वह सूअर पकड़ने में लगा देता है और सफल हो जाता है। लेकिन उसका दिल बुरी तरह टूट चुका होता है

क्योंकि इतने दिनों से वो जिस शालू के आगे अपनी इन परिस्थितियों को छिपाता फिर रहा था, वो भी आज इस भीड़ व अन्य सहपाठियों के साथ इस तमाशे में भरपूर मज़ा ले रही थी। जब्या चोरी-चोरी नज़रों से उसे खिलखिलाकर हँसते हुए देखता है। इस पूरे तमाशे के दौरान उसके सहपाठी लगातार उसे फेंडरी यानि सूअर बोल-बोल कर छेड़ते जा रहे थे। जब्या चुपचाप अपने परिवार के साथ सूअर लिए घर की ओर निकल जाता है। तमाम दर्शक उसके साथ हो लेते हैं और उसे लगातार चिढ़ाते रहते हैं, उसकी बहनों पर फब्तियाँ कसते हैं।

इतने दिनों से मन में ज्वालामुखी दबाये जब्या के लिए यह सब असहनीय होने लगता है। लगातार खुद को रोकने के प्रयास में उसका इतने लंबे समय से दबा गुस्सा अचानक आज फूट पड़ता है और किसी के संभाले नहीं संभलता है। लगातार पत्थर उठाकर सबको मारता चला जाता है। लगातार चुपचाप शोषण का शिकार एक शोषित आज विद्रोह कर उठता है। इससे पहले तक उसके मन में शालू को लेकर हर आकांक्षा आज ध्वस्त हो चुकी थी। मन की वह उम्मीद कि शालू भी शायद मन ही मन उसे चाहती है, ध्वस्त हो चुकी थी। इसी दुख ने उसके अंदर की हर सहन शक्ति को आज समाप्त कर दिया और जब्या का साक्षात्कार एक कड़वे यथार्थ से हुआ। वह हर शोषण का विद्रोह कर उठा। यही इस फिल्म का अंत है जो एक विद्रोह की शुरुआत है। फिल्म के अंत में जब्या द्वारा मारे जाने वाला पत्थर दरअसल फ़िल्मकार की चोट है इस दोगुले समाज को। यह वह समाज है जो एक ओर तो गांधी, अंबेडकर, ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले का आदर्श हम सबके सामने रखता है और दूसरी ओर इनका व्यवहार इस किसी भी आदर्श के समकक्ष तो क्या आस-पास भी दिखाई नहीं देता। अतः फेंडरी इस समाज को मारा जाने वाला पत्थर है।

मुख्यतः यह कहानी जब्या व उसके संघर्ष की है। जब्या जो दरअसल एक प्रतिनिधि पात्र है उस समुदाय का जो आज आज़ादी के 65 वर्षों के बाद भी अछूत माना जाता है। इसे और ठीक करके कहें तो यह उस पात्र का प्रतिनिधित्व करता नज़र आता है, जिसे समाज के अन्य वर्गों ने अपने समान अभी तक स्वीकारा नहीं है। जो जन्म ही तथाकथित उच्च वर्णों की सेवा करने के लिए व गालियां खाने के लिए लेते हैं। फिल्म में यह साफ दिखाया गया है कि किस प्रकार एक 13-14 वर्ष का बच्चा हमारे समाज की जाति-व्यवस्था का शिकार होता है। किस प्रकार वह अपना बचपन खो देता है। खेलने-कूदने की उम्र में मजदूरी करता है। उससे भी यह अपेक्षा की जाती है कि वह भी अपने पिता की तरह गाँव भर की चाकरी करे, पर यह जब्या को स्वीकार नहीं। वह शांति से प्रतिरोध करते हुए दिखता है, यह कहता हुआ कि यह मेरा काम नहीं है। एक ओर स्कूल में जाति-पाति के खिलाफ पढ़ाया जा रहा है। लेकिन व्यवहार में आज भी वही पुरानी घिसी-पिटी मान्यताएँ देखने को मिलती हैं। फिल्म इस कॉन्ट्रास्ट को दिखाने में सफल दिखती है। अंबेडकर, ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले के महाराष्ट्र के गांवों में आज भी यह भेदभाव देखने को मिलता है। फिल्म में किशोर मनोविज्ञान को बहुत गहराई से दर्शाया गया है। किशोरावस्था में जब्या जैसे किसी भी बच्चे की प्रेरणा उसकी उम्र की एक लड़की का होना स्वाभाविक है। इसी मनोविज्ञान को समझते हुए नागराज मंजुले ने शालू को जब्या की प्रेरणा के रूप में दिखाया है। वह उसकी नज़र में अच्छा होने के लिए कुछ भी कर सकता है। वह कोई मेहनत करने से नहीं चूकता। वह सिर्फ शालू को पाना चाहता है, लेकिन उससे दिल टूटते ही उग्र प्रतिरोध कर उठता है। सूअर को कहानी में इस दलित समाज के प्रतीक के रूप में रखा गया है। निर्देशक अपनी दृष्टि दर्शकों को बखूबी ढंग से समझा पाये हैं कि किस प्रकार एक दबित-कुचलित वर्ग उग्र होता है। फिल्म मे यह साफ झलकता है कि कोई भी चाहकर उग्र नहीं होता। उसके उग्र होने के पीछे शोषण की एक लंबी प्रक्रिया होती है, जो उसे विद्रोह करने पर मजबूर कर देती है। नागराज मंजुले इस फिल्म को समाज के आइने के रूप में पेश करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार-

- फिल्म Fandry , निर्देशक- नागराज मंजुले, रिलीज़- 14 फरवरी 2013

संदर्भ ग्रंथ-

i. भारतीय हिन्दी सिनेमा की विकास यात्रा, वीरेंद्र सिंह यादव, पैसिफिक बुक इंटरनेशनल, 2012, दिल्ली।

पत्रिकाएँ –

i. नया पथ : हिन्दुस्तानी सिनेमा के सौ बरस, जनवरी-जून : 2013(संयुक्तांक), मुरली मनोहर प्रसाद सिंह, नई दिल्ली।

ii. हंस : हिन्दी सिनेमा के सौ साल, फरवरी 2013, राजेंद्र यादव, नई दिल्ली।

iii. वसुधा : हिन्दी सिनेमा पर केन्द्रित, अंक 81, सितंबर 2009, स्वयं प्रकाश, भोपाल।